

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 12-12-2025

- » चीन का 1 ट्रिलियन डॉलर का व्यापार अधिशेष: विश्व और भारत पर प्रभाव
 - » भारत की परमाणु ऊर्जा उत्पादन FY 2024-25 में रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुँचा
 - » मेक्सिको द्वारा भारत और चीन से आयात पर 50% तक शुल्क अधिरोपित
 - » बचत में बदलाव से भारत के बाजारों का नया आकार

संक्षिप्त समाचार

- » सर्वोच्च न्यायालय द्वारा POSH (यौन उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम) का दायरा विस्तृत
 - » सर्वोच्च न्यायालय का नार्को टेस्ट पर निर्णय
 - » भारत का प्रथम हाइड्रोजन फ्यूल सेल यात्री पोत
 - » रेड-शैंकेड डुक बंदर
 - » सुबनसिरी लोअर हाइडल परियोजना
 - » प्रथम स्वदेशी डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट 'डीएससी ए20'
 - » चैंपियंस ऑफ द अर्थ अवॉर्ड

चीन का 1 ट्रिलियन डॉलर का व्यापार अधिशेष: विश्व और भारत पर प्रभाव

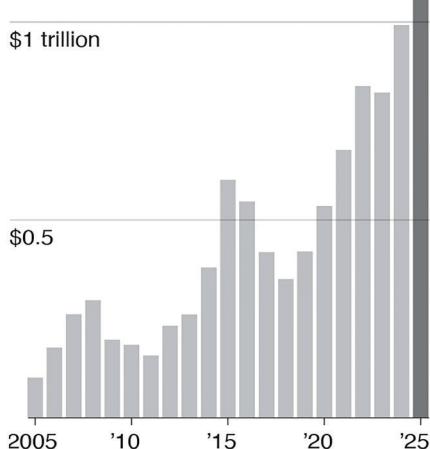
संदर्भ

- हाल ही में, चीन का व्यापार अधिशेष 2025 के प्रथम ग्यारह माह में \$1 ट्रिलियन से अधिक हो गया, जो वैश्विक विनिर्माण और निर्यात में चीन की प्रभुत्वता को रेखांकित करता है। यह साथ ही अंतर्निहित आर्थिक कमजोरियों और वैश्विक व्यापार विकृतियों को भी उजागर करता है।

\$1 ट्रिलियन व्यापार अधिशेष का महत्व और माइलस्टोन

- यह चीन के दो दशकों के औद्योगिक विस्तार और नीति निरंतरता का परिणाम है, जिसमें सघन आपूर्ति श्रृंखलाएँ, गहरी अवसंरचना एवं विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र शामिल हैं।
 - कमजोर युआन (विनिमय दर प्रभाव) ने इसे बढ़ाया है, लेकिन मूल चालक उत्पादन क्षमता ही है।

China's Annual Trade Surplus



Note: Data for 2025 includes the first 11 months of the year. Sources: China General Administration of Customs; FactSet.

THE NEW YORK TIMES

- यह कमजोर घेरेलू मांग और अस्थिर वैश्विक व्यापार वातावरण के बीच आया है।

व्यापार अधिशेष के पीछे

- चीन का विनिर्माण प्रभुत्व: एक अध्ययन के अनुसार, यूके की औद्योगिक क्रांति या अमेरिका के द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात के युग के बाद से किसी भी राष्ट्र ने वैश्विक विनिर्माण पर इतना व्यापक नियंत्रण नहीं किया है जितना चीन ने।

- वैश्विक व्यापार-से-जीडीपी अनुपात 1970 से दोगुना से अधिक हो गया है, 25% से बढ़कर 2022 में 60% से अधिक, जिससे चीन की औद्योगिक ताकत के परिणाम और गहरे हो गए।
- दो दशकों में, चीनी विनिर्मित निर्यात 25 गुना बढ़ा है, जिसे कम श्रम लागत, पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं और राज्य समर्थन ने शक्ति दी।
- निर्यात संरचना:** यह उच्च-मूल्य विनिर्माण की ओर निर्णयिक बदलाव को दर्शाता है।
 - मजबूत क्षेत्र: ऑटोमोबाइल, इंटीग्रेटेड सर्किट, और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स।
 - कमजोर क्षेत्र: श्रम-प्रधान उद्योग जैसे परिधान, वस्त्र, और खिलौने।
- बदलता व्यापार भूगोल:** अमेरिका को भेजे गए माल में वर्ष-दर-वर्ष 29% की गिरावट आई, मुख्यतः नए टैरिफ और कमजोर अमेरिकी मांग के कारण।
 - लेकिन कुल निर्यात बढ़ा क्योंकि चीन ने अपने बाजारों का विविधीकरण किया, मुख्यतः ग्लोबल साउथ और उभरती अर्थव्यवस्थाओं की ओर।
 - दक्षिण-पूर्व एशिया के माध्यम से ट्रांसशिपमेंट, जो टैरिफ बाधाओं के प्रति कंपनियों की अनुकूलनशील प्रतिक्रिया को दर्शाता है।
 - यह रणनीतिक लचीलापन और विकसित होती वैश्विक व्यापार मानचित्र को दर्शाता है, जहाँ चीन का प्रभाव विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में विस्तार तक पहुँच रहा है।

क्या आप जानते हैं?

- प्रथम 'चाइना शॉक':** 2001 में चीन के WTO में शामिल होने के बाद वैश्विक विनिर्माण को पुनः आकार दिया।
 - सस्ते चीनी सामानों से बाजार भर गए और पश्चिमी देशों में लाखों औद्योगिक रोजगार समाप्त हो गए।
- दूसरा 'चाइना शॉक':** उन्नत विनिर्माण और स्वच्छ प्रौद्योगिकी में चीन का उदय, विशेषकर इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरियाँ, सौर पैनल एवं इलेक्ट्रॉनिक्स।

नीति निहितार्थ

- चीन का केंद्रीय आर्थिक कार्य सम्मेलन (CEWC), जो देश की वार्षिक आर्थिक नीति बैठक है, इस रिकॉर्ड अधिशेष को सफलता और चेतावनी दोनों के रूप में देखता है। इसमें संभवतः शामिल होगा:
 - घरेलू मांग को सुदृढ़ करने की दिशा में विकास का पुनर्संतुलन।
 - अति-क्षमता को नियंत्रित करना और 'इन्वोल्यूशन' को कम करना।
 - प्रौद्योगिकी उन्नयन और हरित विनिर्माण को बढ़ावा देना।
 - वैश्विक चुनौतियों के बीच विश्वास को स्थिर करना।
 - मुख्य ध्यान संरचनात्मक सुधार, नवाचार और सतत विकास पर रहेगा, न कि केवल अधिशेष संख्याओं पर।
- IMF ने अधिशेष का कारण आंशिक रूप से युआन के वास्तविक अवमूल्यन को बताया है, जो चीन की कम मुद्रास्फीति से प्रेरित है।
 - IMF ने चीन से घरेलू उपभोग को प्रोत्साहित करने और विनिमय दर में अधिक लचीलापन की अनुमति देने का आग्रह किया है।

चीन के \$1 ट्रिलियन व्यापार अधिशेष के वैश्विक निहितार्थ

- अति-क्षमता और वैश्विक घर्षण: चीन का बढ़ता अधिशेष घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दुविधाओं को तीव्र करता है।
- व्यापार असंतुलन और मुद्रा युद्ध: अमेरिका और यूरोपीय संघ को चीन के साथ रिकॉर्ड घाटे का सामना करना पड़ रहा है।
 - 2025 में अमेरिका का घाटा \$480 बिलियन अनुमानित है, जिससे नए टैरिफ बढ़ रहे हैं।
- मुद्रास्फीति दबाव: चीन का नियंत्रित-प्रेरित अधिशेष (EVs, स्टील, सौर) वैश्विक औद्योगिक कीमतों को दबा रहा है, जिससे OECD अर्थव्यवस्थाओं में 'आयातित अपस्फीति' का जोखिम बढ़ रहा है।

- भूराजनीतिक प्रभाव: चीन का अधिशेष उसकी वैश्विक तरलता प्रभुत्व को बेहतर करता है, बेल्ट एंड रोड और युआन-आधारित व्यापार के माध्यम से ग्लोबल साउथ को अधिक क्रांति देता है।
 - लेकिन पश्चिमी शक्तियाँ इसे 'व्यापारिक आक्रामकता' मानती हैं, जिससे औद्योगिक नीति प्रतिशोध (जैसे EU का CBAM) शुरू होता है।
- एशियाई अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्संरेखण: ASEAN, ताइवान और भारत आंशिक रूप से आपूर्ति श्रृंखला बदलाव से लाभान्वित होते हैं, लेकिन मूल्य प्रतिस्पर्धा और डंपिंग जोखिम का सामना भी करते हैं।

भारत के लिए निहितार्थ

- बढ़ता व्यापार घाटा और विनिर्माण दबाव: भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा FY2025 में \$95 बिलियन तक पहुँच गया, क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक्स, सौर घटक और APIs का आयात बढ़ा।
 - घरेलू विनिर्माण दबाव: 'मेक इन इंडिया' और PLI योजनाएँ चीन के लागत-कुशल नियंत्रण से तीव्र प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही हैं।
- निवेश और आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संरेखण: बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चीन से विविधीकरण कर रही हैं। 'चाइना+1' रणनीति भारत, वियतनाम और मेक्सिको को लाभ देती है।
 - लेकिन भारत में तुलनीय लॉजिस्टिक्स और अवसंरचना की कमी है, जिससे निवेश प्रवाह धीमा है।
- मुद्रा और मुद्रास्फीति प्रभाव: युआन का अवमूल्यन वैश्विक कीमतों पर अपस्फीति दबाव डालता है, जिससे भारत के आयात सस्ते होते हैं और मुद्रास्फीति नियंत्रण में सहायता मिलती है, लेकिन स्थानीय उत्पादकों को हानि होती है।
- रणनीतिक निर्भरता: भारत के महत्वपूर्ण क्षेत्र (फार्मा APIs, इलेक्ट्रॉनिक्स) चीनी आयात पर निर्भर बने हुए हैं।

भारत की रणनीतिक प्रतिक्रियाएँ

- व्यापार विविधीकरण: UAE और EU के साथ FTA प्रगति पर है, लेकिन ASEAN एवं अफ्रीकी बाजारों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

- आत्मनिर्भर भारत: भारत आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रहा है ताकि चीनी आयात पर निर्भरता कम हो।
- विनिर्माण प्रोत्साहन: इलेक्ट्रॉनिक्स, सौर, सेमीकंडक्टर में PLI और मूल्य श्रृंखला स्थानीयकरण को तीव्र करने की आवश्यकता है।
- भूराजनीतिक लाभ: व्यापार कूटनीति का उपयोग करके चीन के प्रभुत्व को संतुलित करना, क्योंकि भारत QUAD और IPEF का सक्रिय भागीदार है।
- भारत की प्रतिक्रिया दो स्तरों पर होनी चाहिए:
 - लघु अवधि: गुणवत्ता नियंत्रण को सख्त करना, घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करना और डंपिंग प्रथाओं की निगरानी करना।
 - दीर्घ अवधि: अनुसंधान एवं विकास, कौशल विकास और अवसंरचना में निवेश करना ताकि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी उद्योग बनाए जा सकें।

Source: IE

भारत की परमाणु ऊर्जा उत्पादन FY 2024-25 में रिकॉर्ड ऊँचाई पर पहुंचा

संदर्भ

- परमाणु ऊर्जा विभाग के अनुसार, NPCIL ने प्रथम बार FY 2024-25 में 50 बिलियन यूनिट (BUs) विद्युत उत्पादन को पार कर लिया है।

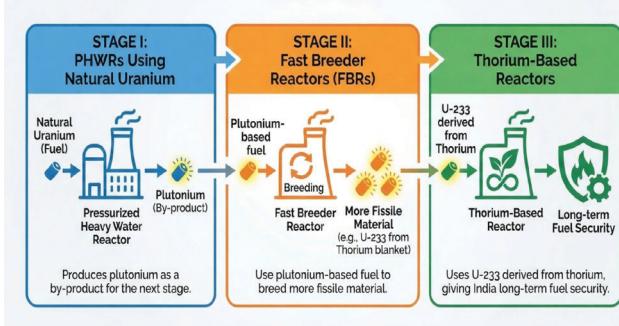
भारत में परमाणु ऊर्जा

- भारत विश्व के अद्वितीय परमाणु कार्यक्रमों में से एक संचालित करता है, जो तीन-चरणीय परमाणु रणनीति पर आधारित है और भारत के प्रचुर थोरियम भंडार का उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- देश में वर्तमान स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता लगभग 8.78 GW है, जो 24 परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों में फैली हुई है।
- जुलाई 2025 तक, परमाणु ऊर्जा कुल विद्युत उत्पादन में लगभग 3.1% का योगदान करती है।

परमाणु ऊर्जा क्या है?

- परमाणु ऊर्जा वह ऊर्जा है जो परमाणु प्रतिक्रियाओं के दौरान निकलती है, चाहे विखंडन (परमाणु नाभिक का

- विभाजन) के माध्यम से हो या संलयन (परमाणु नाभिक का विलय) के माध्यम से।
- परमाणु विखंडन में, यूरेनियम या प्लूटोनियम जैसे भारी परमाणु नाभिक हल्के नाभिकों में विभाजित हो जाते हैं, जिससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा निकलती है।
 - इस प्रक्रिया का उपयोग परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है।



परमाणु विस्तार के लिए सरकारी पहल

- न्यूक्लियर एनर्जी मिशन:** सरकार ने 2047 तक देश की परमाणु ऊर्जा क्षमता को 100 GW तक बढ़ाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है।
 - भारत ने छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (SMRs) के विकास के लिए 20,000 करोड़ रुपये का R&D मिशन घोषित किया है। भारत का लक्ष्य 2033 तक कम से कम पाँच स्वदेशी रूप से विकसित रिएक्टरों की तैनाती करना है।
- NPCIL और नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन (NTPC) ने देश में परमाणु ऊर्जा सुविधाओं के विकास के लिए एक पूरक संयुक्त उद्यम समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
 - यह JV, जिसका नाम ASHVINI है, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण, स्वामित्व और संचालन करेगा, जिसमें आगामी 4x700 MWe PHWR माही-बांसवाड़ा राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना शामिल है।
- रावतभाटा परमाणु ऊर्जा परियोजना की इकाई 7 उत्तरी ग्रिड से जुड़ी और वाणिज्यिक संचालन शुरू किया।
- परमाणु ऊर्जा आयोग ने दस अतिरिक्त 700 MWe PHWRs के लिए पूर्व-परियोजना गतिविधियों को

मंजूरी दी, जो 2032 तक नियोजित 22.5 GW परमाणु क्षमता से परे हैं।

परमाणु प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग

- कृषि और खाद्य प्रसंस्करण:** DAE ने दो नई फसल किस्में विकसित कीं: TBM-9, एक जलदी पकने वाली केला किस्म, और RTS-43, एक उच्च-उपज ज्वार किस्म।
- रणनीतिक क्षेत्रों में प्रगति:**
 - हेवी वाटर बोर्ड ने बोरॉन-11 का 99.8% संवर्धन प्राप्त किया, जो सेमीकंडक्टर अनुप्रयोगों के लिए उपयुक्त है।
 - भारत की डार्क मैटर खोज परियोजना, INDEX, का प्रथम प्रायोगिक परीक्षण जादुगुड़ा भूमिगत विज्ञान प्रयोगशाला में शुरू हुआ।

परमाणु प्रौद्योगिकी से जुड़ी चिंताएँ

- उच्च पूंजी लागत और लंबी अवधि:** परमाणु संयंत्रों के लिए भारी प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है, जिससे वे सौर या पवन ऊर्जा की तुलना में महंगे हो जाते हैं।
- रेडियोधर्मी अपशिष्ट प्रबंधन:** प्रयुक्त ईंधन हजारों वर्षों तक खतरनाक बना रहता है। इसके लिए सुरक्षित भंडारण, पुनःप्रसंस्करण और दीर्घकालिक भूवैज्ञानिक निपटान की आवश्यकता होती है।
- सुरक्षा जोखिम:** विनाशकारी घटनाएँ (चेरनोबिल, फुकुशिमा) कम संभावना लेकिन उच्च प्रभाव वाले जोखिमों को दर्शाती हैं।
 - निकासी, प्रदूषण और दीर्घकालिक पारिस्थितिक प्रभाव सार्वजनिक स्वीकृति को कठिन बना देते हैं।
- जल-प्रधान प्रौद्योगिकी:** परमाणु रिएक्टरों को शीतलन के लिए बड़ी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है।
 - यह सूखा-प्रवण या जल-संकटप्रस्त क्षेत्रों में उपयुक्त नहीं है।

आगे की राह

- परमाणु ऊर्जा को एक सतत, विस्तार योग्य और सुरक्षित ऊर्जा स्रोत के रूप में बढ़ावा देकर, सरकार ऊर्जा सुरक्षा

को सुदृढ़ करने और राष्ट्र के दीर्घकालिक आर्थिक एवं पर्यावरणीय लक्ष्यों को पूरा करने का लक्ष्य रखती है।

- विकसित भारत के लिए परमाणु ऊर्जा मिशन** परमाणु ऊर्जा विकास को तीव्र करने के लिए तैयार है, जिससे भारत 2047 तक उन्नत परमाणु प्रौद्योगिकी में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित हो सके।

Source: DD NEWS

मेक्सिको द्वारा भारत और चीन से आयात पर 50% तक शुल्क अधिरोपित

संदर्भ

- मेक्सिको ने गैर-FTA साझेदारों (जिसमें भारत भी शामिल है) से आयात पर 50% तक का शुल्क लगाने को स्वीकृति दी है, जो 1 अप्रैल 2026 से प्रभावी होगा।

व्यापार संरक्षणवाद क्या है?

- व्यापार संरक्षणवाद उन नीतिगत उपायों को संदर्भित करता है, जैसे शुल्क, कोटा, आयात लाइसेंसिंग, स्थानीय सामग्री नियम, जिनका उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना होता है।
- वर्तमान संरक्षणवाद की लहर के प्रमुख कारण:**
 - वैश्विक विकास की मंदी और आपूर्ति-श्रृंखला की कमजोरियाँ।
 - अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं द्वारा रणनीतिक पुनःस्थापन।
 - भू-राजनीतिक तनाव और घरेलू नौकरियों की रक्षा का दबाव।
 - डंपिंग, सब्सिडी और अनुचित व्यापार प्रथाओं को लेकर चिंताएँ।

मेक्सिको के शुल्क उपाय की पृष्ठभूमि

- 2024 में, मेक्सिको ने उन देशों से आयातित वस्तुओं पर 5-50% शुल्क लगाया जिनके साथ मुक्त व्यापार समझौता (FTA) नहीं है।
- यह उपाय एशियाई देशों जैसे भारत, चीन और थाईलैंड से आयात को लक्षित करता था। अब मेक्सिको की सीनेट ने इन शुल्कों को अप्रैल 2026 के बाद भी लागू रखने का निर्णय लिया है।

- भारत का वर्तमान में मेक्सिको के साथ कोई FTA या PTA (प्राथमिकता व्यापार समझौता) नहीं है, जिससे वह इन शुल्कों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।

मेक्सिको के शुल्क निर्णय के पीछे कारण

- अमेरिका को संतुष्ट करना (USMCA समीक्षा के अंतर्गत):** माना जाता है कि मेक्सिको ने गैर-FTA साझेदारों से आयात पर उच्च शुल्क का विस्तार अमेरिका को खुश करने के लिए किया है, ताकि आगामी अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा समझौते (USMCA) की समीक्षा से पहले त्रिपक्षीय समझौते के अंतर्गत व्यापार स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।
 - अमेरिका लैटिन अमेरिकी देशों पर दबाव डाल रहा है कि वे एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ अपने आर्थिक जुड़ाव को सीमित करें, जिन्हें वह क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी मानता है।
- राजस्व सूजन:** शुल्क उपाय मेक्सिको की अगले वर्ष अनुमानित \$3.76 बिलियन एकत्रित करने की आवश्यकता से भी प्रेरित हैं, ताकि उसके राजकोषीय घाटे को कम किया जा सके। आयात पर उच्च शुल्क तत्काल गैर-कर राजस्व स्रोत प्रस्तुत करते हैं।

भारत के ऑटोमोबाइल क्षेत्र पर प्रभाव

- निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता का क्षण:** भारतीय कंपनियाँ, विशेषकर यात्री कार, मोटरसाइकिल और ऑटो-घटक क्षेत्रों में, उन देशों से सख्त प्रतिस्पर्धा का सामना करती हैं जिन्हें FTA-आधारित शून्य शुल्क पहुँच प्राप्त है।
 - मेक्सिको भारत का तीसरा सबसे बड़ा कार निर्यात बाजार है, दक्षिण अफ्रीका एवं सऊदी अरब के बाद। यह भारत के कुल ऑटो और ऑटो पार्ट्स निर्यात का लगभग 10% और मोटरसाइकिल निर्यात का 12% हिस्सा है।
- भारत की विकास रणनीति के लिए जोखिम:** ऑटोमोबाइल निर्यात MSME आपूर्तिकर्ता नेटवर्क में रोजगार, 'मेक इन इंडिया' के तहत विनिर्माण, विदेशी मुद्रा आय आदि का समर्थन करते हैं और संरक्षणवाद इन संबंधों को खतरे में डालता है।

- आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान:** संरक्षणवादी बाधाएँ वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs) में एकीकरण को धीमा करती हैं। ऑटोमोबाइल घटक, जहाँ भारत पैमाना बना रहा है, छोटे शुल्क परिवर्तनों के प्रति भी संवेदनशील हैं।

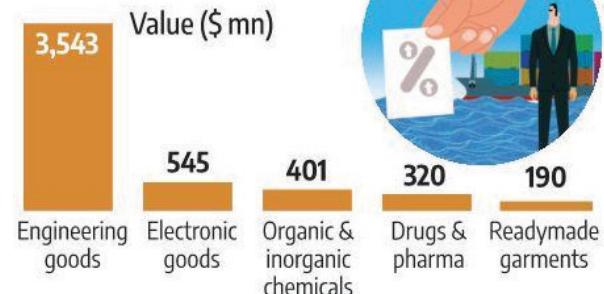
आगे की राह

- व्यापार वार्ता शुरू करना:** इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद (EEPC) ने भारत सरकार से मेक्सिको के साथ FTA या PTA वार्ता शुरू करने का आग्रह किया है।
 - EEPC ने चेतावनी दी है कि लगातार शुल्क भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता को कम कर सकते हैं और स्थायी रूप से बाजार हिस्सेदारी घटा सकते हैं।
- ऑटो क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता की रक्षा:** ऑटोमोबाइल, ऑटो घटक और इंजीनियरिंग वस्तुओं में प्रभावित निर्यातकों के लिए लक्षित समर्थन।
- निर्यात लचीलापन बढ़ाना:** गुणवत्ता सुधार, लागत दक्षता और लॉजिस्टिक्स सुधार को बढ़ावा देना ताकि शुल्क आघातों को सहा जा सके।
 - मेक्सिको में स्थानीय असेंबली या संयुक्त उद्यमों की खोज करना ताकि शुल्क बाधाओं को पार किया जा सके।

भारत-मेक्सिको संबंधों पर संक्षिप्त जानकारी

- राजनीतिक संबंध:** मेक्सिको लैटिन अमेरिका का पहला देश था जिसने 1950 में स्वतंत्र भारत के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए। वर्ष 2025 द्विपक्षीय राजनयिक संबंधों की हीरक जयंती (75 वर्ष) का प्रतीक होगा।

Top 5 export items to Mexico in FY25



- द्विपक्षीय व्यापार:** USD 10.58 बिलियन के व्यापार के साथ, भारत 2023 में मेक्सिको का नौवा

- सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था। 2023 में द्विपक्षीय व्यापार में भारत का मेक्सिको से आयात US\$ 2.54 बिलियन और निर्यात US\$ 8.03 बिलियन शामिल था।
- भारतीय समुदाय:** मेक्सिको में भारतीय समुदाय (PIOs/NRIs) छोटा है, लगभग 10,000 की संख्या में, जिनमें से लगभग पाँचवाँ हिस्सा मेक्सिको सिटी में रहता है।

Source: TH

बचत में बदलाव से भारत के बाजारों का नया आकार

संदर्भ

- घरेलू बचत भारत में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPIs) को प्रमुख बाजार शक्ति के रूप में प्रतिस्थापित कर रही है।

परिचय

- नवीनतम NSE (नेशनल स्टॉक एक्सचेंज) मार्केट पल्स रिपोर्ट दिखाती है कि भारतीय इकिवटी में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (FPI) की हिस्सेदारी 15 महीने के निम्न स्तर 16.9% और NIFTY 50 में 24.1% पर है।
- इस बीच, घरेलू म्यूचुअल फंड (MFs) तिमाही दर तिमाही नए उच्च स्तर पर पहुँच रहे हैं।
 - सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान्स (SIPs) रिकॉर्ड प्रवाह ला रहे हैं, और व्यक्तिगत निवेशक, प्रत्यक्ष होलिडंग्स एवं MFs के माध्यम से, अब बाजार का लगभग 19% हिस्सा रखते हैं, जो दो दशकों में सबसे अधिक है।

घरेलू बचत

- घरेलू बचत वह अंतर है जो किसी परिवार की शुद्ध उपलब्ध आय और उसके कुल उपभोग व्यय (करों और क्रण पुनर्भुगतान सहित) के बीच होता है। भारत में घरेलू बचत कुल घरेलू बचत का सबसे बड़ा घटक है, लगभग 55–60%।

घरेलू बचत की संरचना

- वित्तीय बचत:** बैंक जमा, बीमा और पेंशन फंड, म्यूचुअल फंड और इकिवटी, छोटी बचत योजनाएँ (PPF, NSC, सुकन्या समृद्धि, डाकघर योजनाएँ)।
- भौतिक बचत:** अचल संपत्ति (घर, भूमि), सोना और आभूषण, टिकाऊ वस्तुएँ।
- ये पूँजी निर्माण का प्रमुख स्रोत हैं, निवेश को वित्तपोषित करते हैं और दीर्घकालिक आर्थिक विकास का समर्थन करते हैं।
 - घरेलू बचत अस्थिर विदेशी पूँजी प्रवाह का एक स्थिर विकल्प प्रदान करती है।
- हाल की प्रवृत्ति:**
 - भौतिक से वित्तीय बचत की ओर बदलाव, विशेषकर युवा परिवारों में।
 - SIPs, म्यूचुअल फंड और डिमैट खातों के माध्यम से शेयर बाजारों में खुदरा भागीदारी में वृद्धि।

घरेलू बचत के वित्तीयकरण के प्रमुख चालक

- संरचनात्मक चालक:** अर्थव्यवस्था का औपचारिकरण – GST, नोटबंदी ने बैंकिंग प्रणाली को बढ़ावा दिया।
 - डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना: UPI, आधार, e-KYC ने वित्तीय उत्पादों तक आसान पहुँच सक्षम की।
- उपभोग और निवेश पैटर्न में बदलाव:** कोविड के बाद उपभोग पुनरुद्धार ने उपभोग, आवास और शिक्षा के लिए उधारी बढ़ा दी।
 - परिवार अब इकिवटी और म्यूचुअल फंड जैसे उच्च-जोखिम वाले परिसंपत्तियों की ओर रुचिकर हो रहे हैं। SIP योगदान ₹3,122 करोड़ (2016) से बढ़कर ₹26,632 करोड़ (2025) हो गया है।
- बाजार और नीति चालक:** सोना/अचल संपत्ति से कम रिटर्न की तुलना में इकिवटी और म्यूचुअल फंड अधिक आकर्षक।
 - SIPs का उदय एक स्थिर मासिक निवेश उपकरण के रूप में।

- ▲ SEBI, RBI, IRDAI, PFRDA जैसी नियामक संस्थाओं द्वारा सुधारों ने विश्वास बढ़ाया।
- ▲ धारा 80C, NPS और छोटी बचत योजनाओं के अंतर्गत कर प्रोत्साहन परिवारों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- **व्यवहारिक चालक:** युवा निवेशकों में अधिक जोखिम लेने की प्रवृत्ति।
 - ▲ डिजिटल सामग्री, फिनटेक ऐप्स के माध्यम से वित्तीय जागरूकता में वृद्धि।

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- **सकारात्मक प्रभाव:**
 - ▲ विदेशी पोर्टफोलियो प्रवाह पर निर्भरता कम करके पूँजी बाजारों को स्थिर करता है।
 - ▲ दीर्घकालिक विकास (अवसंरचना, SMEs) के लिए पूँजी निर्माण को बढ़ाता है।
 - ▲ वित्तीय बाजारों को गहरा करता है जिससे संसाधनों का बेहतर आवंटन होता है।
 - ▲ परिवारों के लिए जोखिम विविधीकरण और संभावित रिटर्न में सुधार करता है।
- **व्यापक लाभ:**
 - ▲ भारत को \$5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था में बदलने में समर्थन करता है।
 - ▲ घरेलू निवेश आधार को व्यापक बनाकर विकसित भारत 2047 के साथ संरचित करता है।
 - ▲ FPI प्रवाह पर कम निर्भरता के साथ, केंद्रीय बैंक पूँजी पलायन से रुपये की रक्षा करने के बजाय बैंक ऋण वृद्धि को प्रोत्साहित करने और विकास-मुद्रास्फीति संतुलन का प्रबंधन करने को प्राथमिकता दे सकता है।

घरेलू बचत के वित्तीयकरण से जुड़ी चिंताएँ

- **बाजार अस्थिरता का बढ़ा हुआ जोखिम:** इक्विटी, म्यूचुअल फंड और बाजार-लिंक्ड साधनों की ओर बदलाव परिवारों को अधिक जोखिम में डालता है।

- **कम वित्तीय साक्षरता:** कई नए खुदरा निवेशक जोखिम-रिटर्न संतुलन, परिसंपत्ति आवंटन या दीर्घकालिक निवेश सिद्धांतों को पूरी तरह नहीं समझते।
 - ▲ यह सामूहिक प्रवृत्ति, अत्यधिक व्यापार और मध्यस्थों द्वारा की जाने वाली गलत बिक्री के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न कर सकता है।
- **अल्पकालिक सट्टा निवेश:** ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया-आधारित सुझाव उच्च-जोखिम वाले सट्टा ट्रेडिंग को प्रोत्साहित करते हैं, न कि उत्पादक दीर्घकालिक बचत को।
- **भौतिक संपत्तियों का कुशन घटना:** सोना और संपत्ति जैसी भौतिक संपत्तियाँ पारंपरिक रूप से मुद्रास्फीति हेजिंग एवं स्थिरता प्रदान करती रही हैं।
 - ▲ वित्तीय संपत्तियों की ओर तीव्रता से बदलाव परिवारों की आघातों को सहने की क्षमता को कम कर सकता है।
- **सीमित सामाजिक सुरक्षा जाल:** भारत में बड़ी अनौपचारिक कार्यबल है जिसमें न्यूनतम पेंशन कवरेज है।
 - ▲ पर्याप्त सुरक्षा जाल के बिना बाजार-आधारित बचत पर अत्यधिक निर्भरता से सेवानिवृत्ति असुरक्षा बढ़ सकती है।
- **नियामक निगरानी चुनौतियाँ:** नए उत्पादों (क्रिप्टो, डेरिवेटिव्स, उच्च-जोखिम फंड) की तीव्रता से वृद्धि नियामकों (SEBI, RBI) पर दबाव डालती है।
 - ▲ कुछ उत्पादों में गलत बिक्री और उच्च शुल्क संरचनाएँ शुद्ध रिटर्न को कम करती हैं।
- **सामूहिक आर्थिक चिंताएँ:** वित्तीय बाजारों में अत्यधिक घरेलू जोखिम व्यापक उपभोग झटकों में बाजार तनाव को प्रसारित कर सकता है, जिससे आर्थिक स्थिरता प्रभावित होती है।

आगे की राह

- **राजकोषीय और कर सुधार:** पूँजीगत लाभ कर और बचत-संबंधी कर संरचनाओं का तार्किकीकरण। PPF और KVP जैसी छोटी बचत योजनाओं पर कर छूट या गारंटीकृत रिटर्न की पेशकश।

- वित्तीय समावेशन का विस्तार:** अनौपचारिक श्रमिकों के लिए स्वचालित नामांकन के साथ राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) का सार्वभौमीकरण। ग्रामीण और अनौपचारिक क्षेत्र के परिवारों के लिए अनुकूलित माइक्रो-बचत उत्पादों को बढ़ावा देना।
- नियामक निगरानी को मजबूत करना:** डिजिटल क्रृषि, म्यूचुअल फंड और बीमा योजनाओं में पारदर्शिता सुनिश्चित करना। असुरक्षित क्रृषि मानदंडों को सख्त करना ताकि प्रोसाइक्लिकल क्रेडिट वृद्धि को रोका जा सके।
- प्रौद्योगिकी नवाचार:** माइक्रो-बचत के लिए फिनटेक प्लेटफॉर्म का उपयोग, AI-आधारित वित्तीय सलाह, और सुरक्षित बचत साधनों के लिए ब्लॉकचेन।
- संस्थागत समन्वय:** मापने योग्य लक्ष्यों के साथ घेरलू बचत पर एक राष्ट्रीय रणनीति विकसित करना।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा POSH (यौन उत्पीड़न से संरक्षण अधिनियम) का दायरा विस्तृत

समाचार में

- सर्वोच्च न्यायालय ने कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (निवारण, प्रतिबंध और निवारण) अधिनियम, 2013 (POSH Act) के अंतर्गत आंतरिक शिकायत समितियों (ICCs) के अधिकार क्षेत्र का विस्तार किया है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि शिकायतें केवल आरोपी के कार्यस्थल पर ही नहीं बल्कि शिकायतकर्ता के कार्यस्थल या किसी भी रोजगार-संबंधी स्थल पर भी दर्ज की जा सकती हैं।

POSH के बारे में

- उत्पत्ति:** यह अधिनियम सर्वोच्च न्यायालय के विशाखा बनाम राजस्थान राज्य (1997) के निर्णय के बाद लागू किया गया था, जिसमें कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न पर

विधायी शून्य को भरने के लिए बाध्यकारी दिशानिर्देश दिए गए थे।

- परिधि और कवरेज:** यह अधिनियम सभी कार्यस्थलों पर लागू होता है, जिनमें सरकारी कार्यालय, निजी क्षेत्र, NGOs, शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल, खेल संस्थाएँ और असंगठित क्षेत्र शामिल हैं। यह रोजगार के लिए उपयोग किए जाने वाले आवासों में घेरलू कामगारों तक भी संरक्षण का विस्तार करता है।
- संस्थागत ढाँचा:**
 - प्रत्येक संगठन जिसमें 10 या अधिक कर्मचारी हों, को एक आंतरिक शिकायत समिति (ICC) बनानी होगी।
 - इसमें अध्यक्ष और कम से कम आधे सदस्य महिलाएँ होंगी, जिनमें एक बाहरी NGO विशेषज्ञ भी शामिल होगा।
 - जिन कार्यस्थलों पर 10 से कम कर्मचारी हैं, वहाँ जिला अधिकारी स्थानीय शिकायत समितियाँ (LCCs) बनाते हैं ताकि पहुंच सुनिश्चित हो सके।

शिकायत और जाँच प्रक्रिया:

- शिकायतें घटना के 3 माह के अंदर दर्ज की जानी चाहिए (पर्याप्त कारण होने पर अतिरिक्त 3 महीने तक बढ़ाई जा सकती हैं)।
- ICC या LCC को 90 दिनों के अंदर समयबद्ध जाँच करनी होगी, गोपनीयता और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों को बनाए रखते हुए।
- परिणामों में सुलह, अनुशासनात्मक कार्वाई (नौकरी समाप्ति तक), या मुआवजा शामिल हो सकता है।
- 90 दिनों के अंदर न्यायालयों में अपील की जा सकती है; द्वूषी शिकायतों पर भी दंड लगाया जाता है।

स्रोत: HT

सर्वोच्च न्यायालय का नार्को टेस्ट पर निर्णय

समाचार में

- सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया कि जबरन या अनैच्छिक नार्को टेस्ट असंवैधानिक और अमान्य हैं।

नार्को टेस्ट के बारे में

- यह एक जाँच प्रक्रिया है जिसमें अपेक्षा की जाती है कि आरोपी, ऐसे परीक्षण से गुजरते समय, छिपे हुए तथ्यों को व्यक्त करेगा।
- इस परीक्षण में आरोपी को कुछ पदार्थों (जैसे बार्बिट्यूरेट्स, उदाहरण: सोडियम पेंटोथल) देकर शांत किया जाता है ताकि उसकी रोक-टोक और तर्क क्षमता कम हो सके।
- यह एक अहिंसक विधि है, जो पॉलीग्राफ या ब्रेन मैपिंग जैसी तकनीकों के समान है।

नार्को टेस्ट की वैधता

- सर्वोच्च न्यायालय ने सेल्वी दिशानिर्देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि बिना स्वतंत्र सहमति के किया गया कोई भी परीक्षण असंवैधानिक है और उसके परिणाम साक्ष्य के रूप में उपयोग नहीं किए जा सकते।
 - यह अनुच्छेद 20 के संरक्षण को बनाए रखता है, जिसमें पूर्वव्यापी कानून, दोहरी सज्जा और आत्म-अभियोग के विरुद्ध सुरक्षा शामिल है।
 - ऐसे परीक्षण अनुच्छेद 21 के अंतर्गत गोपनीयता के अधिकार का भी उल्लंघन करते हैं, जो अनुच्छेद 14 और 19 के साथ मिलकर “गोल्डन ट्रायंगल” बनाते हैं तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता व लोकतांत्रिक सिद्धांतों की रक्षा करते हैं।
- मनोज कुमार सैनी बनाम मध्यप्रदेश राज्य (2023) और विनोभाई बनाम केरल राज्य (2025) में अदालतों ने कहा कि नार्को टेस्ट के परिणाम अकेले दोष सिद्ध नहीं करते और उन्हें अन्य साक्ष्यों से पुष्ट करना आवश्यक है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने बल दिया कि सहमति सूचित होनी चाहिए, मजिस्ट्रेट के सामने दर्ज की जानी चाहिए और चिकित्सकीय, कानूनी व प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपायों के साथ की जानी चाहिए।

स्रोत: TH

भारत का प्रथम हाइड्रोजन फ्यूल सेल यात्री पोत

समाचार में

- भारत ने वाराणसी में अपना प्रथम पूर्णतः स्वदेशी हाइड्रोजन फ्यूल सेल यात्री पोत लॉन्च किया, जो हरित समुद्री परिवहन में एक बड़ा कदम है।

भारत का प्रथम हाइड्रोजन फ्यूल सेल यात्री पोत

- इसे कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने बनाया है और यह अंतर्राष्ट्रीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) के स्वामित्व में है।
 - प्रोटॉन एक्सचेंज मेम्ब्रेन (PEM) तकनीक पर आधारित हाइड्रोजन फ्यूल-सेल सिस्टम भारत के स्वच्छ ऊर्जा और हरित गतिशीलता परिवर्तन में एक प्रमुख क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।
 - एक प्रोटॉन एक्सचेंज मेम्ब्रेन फ्यूल सेल (PEMFC) हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के बीच विद्युत-रासायनिक प्रतिक्रिया के माध्यम से विद्युत उत्पन्न करता है, जिसमें दहन नहीं होता, जिससे यह एक स्वच्छ और कुशल ऊर्जा स्रोत बनता है।

महत्व

- यह लॉन्च भारत के 2070 तक नेट-जीरो लक्ष्य का समर्थन करता है और मैरिटाइम इंडिया विज़न 2030 तथा मैरिटाइम अमृत काल विज़न 2047 के साथ समर्थित है, जो स्वच्छ एवं सतत जलमार्गों को बढ़ावा देता है।
- यह पोत शोर-रहित, प्रदूषण-रहित यात्रा प्रदान करता है, सड़क जाम को कम करता है, पर्यटन को बढ़ावा देता है और पूर्णतः स्वदेशी हरित प्रौद्योगिकी को प्रदर्शित करता है।

Source :PIB

रेड-शैंकेड डुक बंदर

संदर्भ

- केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक यात्री को दो रेड-शैंकेड डुक बंदरों की कथित तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया गया है।

परिचय

- रेड-शैंकेड डुक (पाइगैथिक्स नेमेअस) एक अत्यंत रंगीन ओल्ड वर्ल्ड बंदर की प्रजाति है, जिसे प्रायः “प्राइमेट्स की रानी” कहा जाता है।
- वैज्ञानिक नाम: पाइगैथिक्स नेमेअस
- वितरण क्षेत्र: यह एक वृक्षवासी (arboreal), दिवाचर (diurnal) प्राइमेट है, जो वियतनाम, लाओस और कंबोडिया के वनों में पाया जाता है।
 - ये सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वनों की छतरी में रहते हैं, समुद्र तल से 2,000 मीटर (6,600 फीट) की ऊँचाई तक।
- शारीरिक बनावट: इनकी विशिष्ट बनावट होती है – धूसर शरीर, गहरे लाल निचले पैर, सफेद अग्र-भुजाएँ और पूँछ, नारंगी-पीला चेहरा तथा हल्के नीले पलकें।
 - नर बंदरों की पहचान उनके पिछले हिस्से पर सफेद धब्बों से होती है।
- IUCN स्थिति: गंभीर रूप से संकटग्रस्त (*Critically Endangered*)।



स्रोत: TH

सुबनसिरी लोअर हाइडल परियोजना

संदर्भ

- पर्यावरण मंत्रालय ने NHPC के उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है जिसमें सुबनसिरी लोअर हाइडल परियोजना के लिए धन जुटाने हेतु वन भूमि पर स्थित परिसंपत्तियों को गिरवी रखने की बात कही गई थी।

परियोजना के बारे में

- अवस्थिति:
 - सुबनसिरी नदी पर, जो ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी है।
 - अरुणाचल प्रदेश-असम सीमा पर गेरुकामुख में स्थित।
- क्षमता और प्रकार:
 - कुल स्थापित क्षमता: 2,000 मेगावाट (8×250 मेगावाट)।
 - यह भारत की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं में से एक है।
- रणनीतिक महत्व:
 - पूर्वोत्तर में स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा देता है।
 - ग्रिड स्थिरता को मजबूत करता है और भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन करता है।

Source: IE

प्रथम स्वदेशी डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट 'डीएससी ए20'

संदर्भ

- भारतीय नौसेना दक्षिणी नौसैनिक कमान के अंतर्गत कोच्चि में स्वदेशी रूप से डिज़ाइन और निर्मित डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट (DSC) के पहले पोत DSC A20 को कमीशन करने जा रही है।

परिचय

- DSC A20 पाँच डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट की श्रृंखला में प्रमुख पोत है, जिसे कोलकाता स्थित टिटागढ़ रेल सिस्टम्स लिमिटेड (TRSL) द्वारा बनाया जा रहा है।
- कैटामरन हुल संरचना वाली यह जहाज बेहतर स्थिरता, विस्तृत डेक क्षेत्र और उन्नत समुद्री संचालन क्षमता प्रदान करती है, तथा इसका विस्थापन लगभग 390 टन है।
- इसके शामिल होने से भारतीय नौसेना की डाइविंग सपोर्ट, जल के नीचे निरीक्षण, बचाव सहायता और तटीय परिचालन तैनाती की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

स्रोत: PIB

चैंपियंस ऑफ द अर्थ अवॉर्ड

संदर्भ

- तमिलनाडु की IAS अधिकारी सुप्रिया साहू को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) का 2025 चैंपियंस ऑफ द अर्थ अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

क्या आप जानते हैं?

- वर्ष 2000 में उन्होंने ऑपरेशन ब्लू माउंटेन अभियान शुरू किया था, जिसका उद्देश्य नीलगिरी में सिंगल-यूज प्लास्टिक को समाप्त करना था।
- उन्होंने कम लागत वाले जलवायु समाधान लागू किए, जैसे कूल रूफ प्रोजेक्ट के अंतर्गत स्कूलों की छतों को सफेद रंगना, मैंग्रोव और आर्द्रभूमि का पुनर्स्थापन करना और 65 नए आरक्षित वन बनाना।
- उनके प्रकृति-प्रथम दृष्टिकोण ने 25 लाख हरित रोजगार उत्पन्न किए और भारत के राष्ट्रीय उत्सर्जन-न्यूनकरण लक्ष्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पुरस्कार के बारे में

- 2005 में शुरू किया गया, चैंपियंस ऑफ द अर्थ संयुक्त राष्ट्र का सर्वोच्च पर्यावरण सम्मान है।
- यह सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के साथ-साथ नागरिक समाज के उत्कृष्ट व्यक्तियों को मान्यता देता है, जिनके कार्यों ने पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव और परिवर्तन लाया है।
- यह पाँच श्रेणियों में प्रदान किया जाता है:
 - ▲ नीति नेतृत्व
 - ▲ उद्यमशील दृष्टि
 - ▲ विज्ञान और नवाचार
 - ▲ आजीवन उपलब्धि
 - ▲ प्रेरणा और कार्य — सुप्रिया साहू को इसी श्रेणी में सम्मानित किया गया है।
- पूर्व भारतीय प्राप्तकर्ता:
 - ▲ माधव गाडगिल (2024)
 - ▲ नरेंद्र मोदी (2018)
 - ▲ कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (2018)
 - ▲ अफ्रोज शाह (2016)

Source: Mint

